संक्षिप्त परिचय

नाम :	डॉ. राजीव बिन्दल
पिता का नाम :	स्व. श्री वैद्य बालमुकन्द
स्थाई पता :	बालमुकन्द हॉस्पिटल, अप्पर बाज़ार, सोलन ;हि.प्र.द्ध
जन्म तिथि :	१२ जनवरी, १६५५
जन्म स्थान :	सोलन ;हि.प्र.द्ध
शैक्षणिक योग्यता :	जी.ए.एम.एस. ;आयुर्वेदाचार्यद्ध

परिवारिक पृष्ठभूमि :-

इनके पूज्य पिता स्व. वैद्य बालमुकन्द पूरे प्रदेश के जाने माने वैद्य रहे लगभग ६५ वर्षों तक आयुर्वेद व युनानी पद्धति के माध्यम् से चिकित्सा कार्य किया, हिमालय की जड़ी बूटियों पर निरन्तर शोध कार्य किया और १५० के लगभग नई औषधियों का निर्माण किया । उनका सेवा, सादगी एवं समर्पण भाव से भरा जीवन आज भी क्षेत्रवासियों को प्रेरित करता है सोलन के प्रत्येक सामाजिक व धार्मिक कार्यों में उनके द्धारा तन मन धन से किया गया योगदान अविस्मरणीय है । संघ व अनुसांगिक संगठनों को लगातार उनका आर्शीवाद मिलता रहा । डा० रजीव बिन्दल जी के पॉच बड़े भाई और तीन बड़ी बहनें हैं । इनकी पत्नी श्रीमति मधु बिन्दल एम०एस०सी० (वनस्पतिशास्त्र) में गोल्ड मैडलिस्ट है। श्री विवेक बिन्दल (पुत्र) जनरल सर्जरी में एम०एस० अन्तिम वर्ष की पढ़ाई लगभग पूर्ण कर चुके हैं । सुश्री स्वाति बिन्दल (पुत्री) एम०बी०बी०एस० अन्तिम वर्ष की छात्रा है ।

निजि जीवनः- हिमाचल प्रदेश के जाने माने वैद्य स्व. श्री बालमुकन्द जी के पुत्र के रूप जन्म लेने के पश्चात् अपनी प्राथमिक व हाई स्कूल की शिक्षा राजकीय महा विद्यालय सोलन से प्राप्त की । तत्पश्चात् कुरूक्षेत्र स्थित राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय से ळण्।ण्डण्ैण् ;आयुर्वेदाचार्यद्ध का शिक्षण प्राप्त किया ।

परिवार में रा.स्व.से.संघ के प्रति समर्पण होने के कारण बाल्यकाल से ही इन्होंने संघ कार्य शुरू कर दिया । आठवीं की कक्षा के दौरान संघ का प्राथमिक शिक्षण प्राप्त किया। दसवीं की परीक्षा देते ही संघ का प्रथम वर्ष का शिक्षण जालंधर से व द्वितीय वर्ष का शिक्षण कैथल से प्राप्त किया । इसी दौरान संघ की शाखा के मुख्य शिक्षक व कार्यावाह का दायित्व निर्वाहन किया । आयुर्वेदिक कॉलेज में जाने के बाद संघ व सामाजिक कार्यों को और तेज गति से किया । १६७५ में तात्कालिक प्रधानमंत्री स्व. श्रीमति इंदिरा गॉधी द्वारा देश में आपातकाल ;म्उमतहमदबलद्ध लगा दिया गया । देश के सभी महान् नेताओं को सलाखों के पीछे डाल दिया गया । मीडिया पर सख्त पाबंदी लगा दी गई, सूचनाओं का आदान प्रदान बंद हो गया और तानाशाही शासन प्रारंभ हुआ इस भय के वातावरण में इन्होंने आपातकाल का विरोध करने का निश्चय किया । संघ के मार्गदर्शन में छोटे-छोटे अखबारों के माध्यम से इन्होंने सूचनाओं को घर-घर पहुँचाने का काम शुरू हुआ ताकि तानाशाही प्रवृतियों को रोका जा सके। इसी के दौरान राजनैतिक आधार पर क्प् ;क्मिदबम प्दकपं त्नसमद्ध के अंतर्गत इन्हें सलाखों के पीछे डाल दिया गया । जेल में स्व० मंगल सेन जी, श्री दीनानाथ बत्तरा जी, श्री विश्व नाथ जी, श्री सतीश मित्तल जी, श्री आत्म प्रकाश मनचन्दा जी आदि के साथ रहने का मौका मिला लगभग ४१६२ महीने करनाल जेल में रहने के बाद पंजाब-हरियाणा हाई कोर्ट के आदेश पर दोबारा अपनी शिक्षा शुरू की और १६७८ में अपने महाविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए ळण्।ण्डण्ैण् की डिग्री हासिल की ।

सेवा की तरफ रूझानः– डा० रजीव बिन्दल जी के पिता जी व पारिवारिक सदस्यों के सेवा के प्रति सर्मपण ने इनके जीवन को नई दिशा दी और राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के तात्कालिक प्रचारक स्व. श्री नारायण दास जी के आदेश पर तात्कालिक दक्षिण–बिहार ;आज के झारखंडद्ध में 'हो' नामक जनजाति के मध्य में प्रचारक के रूप में कार्य किया । न क्षेत्र का ज्ञान, न भाषा का ज्ञान, मात्र एक छोटा सा पत्र ले कर इन वनवासियों में कार्य करने पहुँचे डा० रजीव बिन्दल जी ने इनकी भाषा, इनके पहरावे, इनके खान–पान आदि सबके अनुरूप अपने आप को ढालते हुए लगभग २ १/२ वर्षों तक चिकित्सा सेवा के माध्यम से 'हो' जनजाति में एक नई जागृति पैदा की । इन भोले–भाले वनवासियों के पास वर्षों से केवल इसाई मिशन के लोग सेवा के नाम पर धर्मांतरण करने के लिए जाया करते थे । परंतु हिन्दु मिशनरी भी अपने भाईयों को गले लगाने के लिए कभी पहुँचेगा ऐसी कल्पना शायाद किसी को भी न थी, परिणामस्वरूप इसाई मिशन द्वारा इनके उपर अनेक बार जानलेवा हमले हुए। अंतोतगत्वा सेवा की जीत हुई । गोईलेकरा नामक स्थल पर इनकी स्व. माता जी के नाम से आज भी छात्रावास चल रहा है जिसे इनके वहॉ रहते समय इनके पिता जी द्वारा प्रारंभ करवाया गया था और जिसका पूर्ण व्यय १६८२ से सन् २००० तक इनके परिवार द्वारा भेजा जाता रहा ।

सोलन वापिस आ कर मॉं शूलिनी के नगर में इन्होंने अपने पिता जी के साथ मेडिकल प्रेक्टिस शुरू की जहॉ पारिवारिक कार्य होने का इन्हें इसमें लाभ मिला वहीं सेवा इनके जीवन का अविभाज्य अंग बन चुका था, इसके कारण चिकित्सा कार्य तेजी से बढा सर्मपण भाव से काम करने के बावजूद आर्थिक व सामाजिक दोनों प्रकार के लाभ मिले ।

डा० रजीव बिन्दल जी ने १६८४ में हिमगिरि कल्याण आश्रम नामक संस्था खड़ी कर के इसके माध्यम से सेवा करने का निर्णय लिया । इस संस्था के संस्थापक सदस्य व महामंत्री के रूप में कार्य संभालते हुए १६ मई, १६८५ को शिल्ली नामक स्थान पर गरीब बालकों के लिए एक छात्रावास प्रारंभ करने में कामयाबी मिली, भूमि एवं प्रारंभिक धन का प्रावधान श्री चमन लाल चोपड़ा जी द्वारा किया गया । ४ बालकों से प्रारंभ किया गया यह कार्य बहुत बड़े सेवा प्रकल्प के रूप में परिणित हुआ जिस कार्य को व्यक्तिगत रूप से आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन देने श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री नाना जी देशमुख, जगत गुरू श्री शंकराचार्य, संघ के माननीय सरकार्यवाह, श्री हो.वे. शोषाद्री, श्री प्रेम कुमार धूमल, श्री शांता कुमार, आदि पधारे आज पूरे प्रदेश में यह सेवा कार्य फैला और आज हजारों लोग इस सेवा कार्य से लाभान्वित हो रहे हैं १६८५ से २००० तक इस संस्था के प्रदेश महामंत्री के नाते व २००० से २००५ तक सोलन इकाई अध्यक्ष के नाते कार्य किया ।

१६६५ में पहली बार नगरपरिषद् सोलन के पार्षद का चुनाव जनता के आग्रह पर लड़ा व जीता इतना ही नहीं जनता के आशीर्वाद, प्रभु की कृपा से १३ में से ६ पार्षद होते हुए भारी विरोधों के मध्य एक सफल नगरपालिका चलाने में कामयाबी मिली । जनवरी १६६६ से २००० तक अध्यक्ष रहते हुए नगर की व्यवस्थाओं में अमूल–चूल परिवर्तन किया । जिसके परिणामस्वरूप सन् २००० में विधायक पद के चुनाव में इन्हें जनता का बहुत प्यार मिला । २००० से २००३ के मध्य भाजपा की सरकार में विधायक एवं अध्यक्ष पोल्यूशन कंट्रोल बोर्ड रहते हुए सोलन क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास कार्यों को करवाने में कामयाबी मिली । सोलन के किसान की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके इसके लिए ३ विषय तय किए गए :–

;१द्ध किसान के खेत के आस–पास तक एक छोटी सी सड़क पहुँचाना जिसके माध्यम से वो अपनी नगदी फसल टमाटर, मटर, शिमला मिर्च आदि का गाड़ियों में ढुलान

कर सके लगभग ६२ सड़कों का निर्माण किया गया । इसके कारण किसान का समय व पैसा दोनों की बचत हुई

;२द्ध किसान द्वारा पैदा किए गए माल को बेचने के लिए सोलन में एक विशाल सब्जी मंडी का निर्माण किया गया ताकि किसान घर के नजदीक ही पैदावार को बेच कर धन की उगाही कर सके इससे पूर्व किसान लक्कड़ी की पेटियाँ बनाता था, उसमें माल को पैक कर के दिल्ली, अमृतसर, मुम्बई की मंडियों में भेजता था प्रति पेटी ५० रूपये तक का खर्च आता था इतना ही नहीं बाहर की मंडियों में किसान हर प्रकार से शोषित होता था ।

;३द्ध किसान के खेत को पानी मिल सके इस दिशा में विहंगम प्रयास किए गए सिंचाई योजनाओं को मूर्त रूप देने का प्रयास शुरू हुआ परंतु २००३ में सता परिवर्तन होने के बाद कार्यों की गति बाधित हुई ।

इन तीनों प्रयासों से किसान की आय में वृद्धि हुई व खर्चें में कटौती हुई इसी प्रकार नगर क्षेत्र व्यवस्थित हो इसके लिए नगर में चिर प्रतिक्षित बस अडडे का निर्माण किया गया । ट्रांसपोर्ट नगर की रूप रेखा बनाई गई दो बडी–बडी पार्किंग बनाने की योजना की गई । पार्किंग व ट्रांसपोर्ट नगर का कार्य सता परिवर्तन के प्रभाव से आज तक ग्रस्त है ।

सोलन बहुत तेजी से बढ़ने वाला नगर है जिसमें पेयजल की आपूर्ति सबसे बड़ी समस्या है । इसके लिए ३ वर्षों तक अथाह प्रयास करके ५२ करोड़ रूपयों की गिरिपेय जल योजना हेतु भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल से धन का प्रावधान इनके द्धारा करवाया गया जो शायद सोलन के लिए सबसे बडी उपलब्धी है अनेकों विद्यालयों, महाविद्यालयों, कार्यालयों आदि के भवनों का निर्माण सोलन कुमाहरहटी, बाईपास का निर्माण आदि अनेक ऐसे कार्य हैं जिनके कारण क्षेत्र विकास की ओर अग्रसर हुआ ।

२००३ में पुनः क्षेत्र की जनता ने इनके उपर विश्वास व्यक्त करते हुए पुनः से विधानसभा सदस्य बना कर विधानसभा में भेजा । भाजपा के नेता कहलाने वाले व्यक्ति ने पार्टी के खिलाफ चुनाव लड़ा, कांग्रेस के वीरभद्र गुट से समझौता कर के भाजपा व इनके विरूद्ध अनैतिक प्रचार किया, परन्तु भारी विरोध के बावजूद विपरीत स्थितियों में इन्हें सोलन के क्षेत्रवासियों ने जीत दिलाई । विगत ४= वर्षों में हिमाचल प्रदेश की जनता की आवाज को विधानसभा व विधानसभा के बाहर प्रभावी ढंग से उठाया गया । मीडिया के माध्यम से किस प्रकार जनता की समस्याओं को सरकार तक पहुँचाया जा सकता है का सफलतम प्रयोग इनके द्धारा किया गया और अच्छे परिणाम भी सामने आए। पूरे प्रदेश में कांग्रेस के सता संभालने के बाद जो विकास की गति बाधित हुई उसका दुष्प्रभाव सोलन क्षेत्र पर भी पड़ा।

१९९७ से २००० तक भाजपा के हिमाचल प्रदेश के प्रदेश कोषाध्यक्ष का दायित्व निभाया। २००३ से २००६ तक भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता का दायित्व निभाया । २००६ से २००८ तक भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष का दायित्व निभाया । उक्त सभी दायित्वों का बखूबी निर्वाहन करने के बाद ९ जनवरी २००८ से धूमल जी के नेतृत्व में स्वास्थ्य एंव आयुर्वेद विभाग को पूरी शक्ति और निष्ठा के साथ नई उचांईयां प्रदान करने में लगे हैं ।